



स्वयं सहायता समूहों का ग्रामीण महिलाओं की आय एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता पर प्रभाव

डॉ. गोविन्द कुमार सुमन

एसोसिएट प्रोफेसर

अर्थशास्त्र विभाग

गांधी पी.जी. कॉलेज उरई जालौन यू.पी.

सारांश

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं का योगदान कृषि, पशुपालन, खाद्य प्रसंस्करण, हस्तशिल्प, घरेलू उत्पादन तथा पारिवारिक आजीविका में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है, किंतु लंबे समय तक उनके श्रम का बड़ा हिस्सा अवैतनिक अथवा कम प्रतिफल वाली गतिविधियों में केंद्रित रहा। औपचारिक बैंकिंग, सस्ती संस्थागत ऋण सुविधा, संपत्ति पर नियंत्रण, बाजार-संपर्क और वित्तीय निर्णयों में सीमित भूमिका ने ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता को बाधित किया। स्वयं सहायता समूह (Self-Help Groups—SHGs) ने नियमित बचत, आंतरिक ऋण, बैंक-लिंकेज, सामूहिक उत्तरदायित्व, आजीविका प्रशिक्षण और सामाजिक नेटवर्क के माध्यम से इस स्थिति में परिवर्तन का एक संस्थागत आधार प्रदान किया।

यह संशोधित अध्ययन 31 दिसंबर 2022 को समय-सीमा मानते हुए केवल 2023 से पहले उपलब्ध आँकड़ों और शोध-निष्पत्तियों पर आधारित है। दिसंबर 2022 तक DAY-NRLM के अंतर्गत लगभग 8.71 करोड़ ग्रामीण महिलाओं को लगभग 81 लाख स्वयं सहायता समूहों में संगठित किया जा चुका था। NABARD के SHG-Bank Linkage Programme के अनुसार 31 मार्च 2022 तक 118.93 लाख SHGs बैंकों से बचत-लिंक थे, जिनमें 104.05 लाख महिला SHGs थे; महिला समूहों की बैंक बचत लगभग ₹42,104.77 करोड़ थी। ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा दिसंबर 2022 में प्रकाशित 2019-20 के 3ie/World Bank प्रभाव मूल्यांकन के अनुसार मिशन के अतिरिक्त 2.5 वर्ष के exposure से आय में लगभग 19 प्रतिशत वृद्धि, अनौपचारिक ऋण की हिस्सेदारी में 20 प्रतिशत कमी और बचत में 28 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई।

पूर्ववर्ती शोधों से भी यह निष्कर्ष सामने आता है कि SHG सदस्यता महिलाओं की गतिशीलता, वित्तीय निर्णय-क्षमता, सामूहिक कार्रवाई, औपचारिक ऋण तक पहुँच और सामाजिक पहचान को मजबूत कर सकती है; किंतु इसका प्रभाव सभी क्षेत्रों और सभी महिलाओं के लिए समान नहीं होता। कुछ अध्ययनों में आय या परिसंपत्ति निर्माण पर सीमित अथवा अस्पष्ट प्रभाव भी पाया गया है। अतः समूह-सदस्यता को स्वतः आर्थिक आत्मनिर्भरता का पर्याय न मानकर आय की नियमितता, ऋण के उत्पादक उपयोग, बचत, बाजार-संपर्क, महिला की अपनी आय पर नियंत्रण और घरेलू आर्थिक निर्णयों में वास्तविक भूमिका के आधार पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

मुख्य शब्द: स्वयं सहायता समूह, ग्रामीण महिलाएँ, आर्थिक आत्मनिर्भरता, महिला सशक्तीकरण, DAY-NRLM, SHG-Bank Linkage Programme, सूक्ष्म वित्त, ग्रामीण उद्यमिता, वित्तीय समावेशन।

1. प्रस्तावना

भारतीय ग्रामीण समाज में महिलाएँ कृषि, पशुपालन, वनोपज संग्रह, खाद्य प्रसंस्करण, हस्तशिल्प, घरेलू उद्योग और परिवार-आधारित उत्पादन में लंबे समय से सक्रिय रही हैं। इसके बावजूद उनकी आर्थिक भूमिका का एक बड़ा हिस्सा अनौपचारिक, अवैतनिक या कम भुगतान वाला रहा। बहुत-सी महिलाओं के पास स्वतंत्र आय, बैंक खाता संचालित करने की क्षमता, औपचारिक ऋण, उत्पादक परिसंपत्तियों और बाजार की जानकारी तक सीमित पहुँच थी। इस कारण आर्थिक योगदान के बावजूद संसाधनों और निर्णयों पर उनका नियंत्रण अपेक्षाकृत कमजोर बना रहा।

इसी पृष्ठभूमि में स्वयं सहायता समूह ग्रामीण विकास की एक महत्वपूर्ण संस्थागत व्यवस्था के रूप में उभरे। सामान्यतः समान सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों वाली 10-20 महिलाएँ स्वैच्छिक समूह बनाती हैं, नियमित बचत करती हैं, समूह के भीतर छोटे ऋणों का लेन-देन करती हैं और वित्तीय अनुशासन विकसित होने के बाद बैंकिंग प्रणाली से जुड़ती हैं। इस व्यवस्था का मूल विचार यह है कि गरीब महिला की व्यक्तिगत collateral-क्षमता सीमित होने पर भी समूह की सामूहिक विश्वसनीयता और नियमित बचत बैंक-ऋण तक पहुँच का आधार बन सकती है।

NABARD ने 1992 में SHG-Bank Linkage Programme आरंभ किया। बाद के दशकों में राज्य-स्तरीय आजीविका कार्यक्रमों और 2011 में आरंभ राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन ने SHGs को बचत और ऋण की संस्था से आगे बढ़ाकर आजीविका, कौशल, महिला नेतृत्व, सामाजिक विकास और वित्तीय समावेशन के मंच के रूप में विकसित किया। 2022 तक यह मॉडल भारत में ग्रामीण महिला सामुदायिक संस्थाओं का विशाल नेटवर्क बन चुका था।

इस अध्ययन का केंद्रीय प्रश्न यह है कि 2022 तक उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं की आय और आर्थिक आत्मनिर्भरता को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं। केवल समूहों की संख्या या ऋण-वितरण को सफलता का मानदंड मानना पर्याप्त नहीं है; यह भी देखना आवश्यक है कि महिला की व्यक्तिगत आय, बचत, उत्पादक निवेश, ऋण-स्रोत, आर्थिक agency, उद्यम की टिकाऊपन और पारिवारिक निर्णय-क्षमता में वास्तविक परिवर्तन आया या नहीं।

2. अध्ययन की समस्या

स्वयं सहायता समूहों की सफलता का सामान्य मूल्यांकन समूहों की संख्या, बैंक खातों, वितरित ऋण और सदस्यों की संख्या से किया जाता है। ये संकेतक आवश्यक हैं, लेकिन आर्थिक आत्मनिर्भरता का पूर्ण चित्र प्रस्तुत नहीं करते। उदाहरणतः यदि महिला को बैंक से ऋण प्राप्त हो जाता है, पर वह ऋण बीमारी, पुराने कर्ज या सामाजिक समारोहों में खर्च हो जाता है और उससे आय-सृजन नहीं होता, तो वित्तीय पहुँच बढ़ने के बावजूद उसकी दीर्घकालीन आर्थिक स्वतंत्रता सीमित रह सकती है।

इसके विपरीत यदि वही ऋण डेयरी, बकरी पालन, किराना, सब्जी उत्पादन, सिलाई, खाद्य प्रसंस्करण, हस्तशिल्प या किसी अन्य उत्पादक गतिविधि में निवेश होकर नियमित नकद प्रवाह उत्पन्न करता है, तो उसका प्रभाव अधिक व्यापक हो सकता है। इसी प्रकार बैंक खाता

खुल जाना और बैंकिंग पर महिला का वास्तविक नियंत्रण दो अलग बातें हैं। इसलिए अध्ययन में सशक्तीकरण को संसाधन, agency और उपलब्धि—इन तीन परस्पर जुड़े आयामों में देखना अधिक उपयुक्त है (Kabeer, 1999)।

अध्ययन निम्न मूल प्रश्नों पर केंद्रित है—

1. क्या SHG सदस्यता के बाद महिला की व्यक्तिगत अथवा घरेलू आय में वृद्धि के प्रमाण मिलते हैं?
2. क्या नियमित बचत और औपचारिक वित्तीय सेवाओं तक पहुँच बढ़ती है?
3. क्या साहूकार तथा अन्य महंगे अनौपचारिक ऋण स्रोतों पर निर्भरता घटती है?
4. क्या ऋण का उपयोग उत्पादक आजीविका तथा उद्यम में होता है?
5. क्या महिला की अपनी आय और बैंकिंग लेन-देन पर नियंत्रण बढ़ता है?
6. क्या घरेलू आर्थिक निर्णय, गतिशीलता और सामूहिक सौदेबाजी की क्षमता मजबूत होती है?
7. क्या SHG-आधारित आय-सृजन टिकाऊ और बाजार-सक्षम व्यवसाय में परिवर्तित हो पाता है?

3. अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. 2022 तक भारत में महिला स्वयं सहायता समूहों के विस्तार की स्थिति का अध्ययन करना।
2. स्वयं सहायता समूहों का महिलाओं की आय एवं बचत पर प्रभाव समझना।
3. औपचारिक ऋण तथा बैंकिंग सेवाओं तक पहुँच में आए परिवर्तन का विश्लेषण करना।
4. SHG-आधारित ऋण के उत्पादक उपयोग और महिला उद्यमिता की भूमिका का अध्ययन करना।
5. महिलाओं की आर्थिक निर्णय-क्षमता, गतिशीलता और सामूहिक agency पर SHGs के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
6. 2023 से पहले प्रकाशित प्रमुख प्रभाव-अध्ययनों के निष्कर्षों का समेकित विश्लेषण करना।
7. SHG मॉडल की सीमाओं और चुनौतियों की पहचान करना।
8. ग्रामीण महिलाओं की वास्तविक आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ाने हेतु नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

4. शोध-पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है और इसमें द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है। समय-सीमा 31 दिसंबर 2022 निर्धारित की गई है; इसलिए 2023, 2024, 2025 और 2026 के आँकड़े तथा बाद के मूल्यांकन इस संस्करण में सम्मिलित नहीं किए गए हैं।

सांख्यिकीय स्रोतों में NABARD की Status of Microfinance in India 2021–22, ग्रामीण विकास मंत्रालय की 2022 की DAY-NRLM संबंधी आधिकारिक विज्ञप्तियाँ और Year-End Review 2022 प्रमुख हैं। प्रभाव संबंधी प्रमाणों के लिए Swain और Wallentin (2009), Deininger और Liu (2013), Datta (2015), Brody et al. (2017) तथा DAY-NRLM के 2019–20 3ie/World Bank impact evaluation के आधिकारिक 2022 निष्कर्षों का उपयोग किया गया है।

PASSION TOWARDS EXCELLENCE

यह सावधानी आवश्यक है कि अलग-अलग स्रोत अलग कार्यक्रम-सीमाएँ अपनाते हैं। NABARD का SHG-Bank Linkage Programme देश के व्यापक बैंक-लिंकड SHG नेटवर्क को दर्शाता है, जबकि DAY-NRLM के आँकड़े मिशन के अंतर्गत संगठित समूहों से संबंधित हैं। इसलिए दोनों के समूह-संख्या और वित्तीय आँकड़ों को एक ही denominator मानकर सीधे जोड़ना उचित नहीं है।

5. स्वयं सहायता समूहों की अवधारणा

स्वयं सहायता समूह छोटे, स्वैच्छिक और सदस्य-नियंत्रित समूह होते हैं जिनमें महिलाएँ नियमित रूप से मिलती हैं, निर्धारित राशि की बचत करती हैं और समूह के संचित कोष से आवश्यकता अनुसार ऋण लेती हैं। समूह का वित्तीय अनुशासन और पारस्परिक उत्तरदायित्व धीरे-धीरे उसे बैंक ऋण के योग्य बनाता है।

SHG के प्रमुख आर्थिक एवं सामाजिक कार्य इस प्रकार हैं—

बचत का संगठन: छोटी और अनियमित रकम को नियमित सामूहिक बचत में बदलना।

आंतरिक ऋण: आपातकालीन, उपभोग अथवा उत्पादक आवश्यकताओं के लिए स्थानीय स्तर पर ऋण उपलब्ध कराना।

बैंक-लिंकेज: समूह को बचत खाते, ऋण और अन्य औपचारिक वित्तीय सेवाओं से जोड़ना।

वित्तीय अनुशासन: बैठक, लेखा, पुनर्भुगतान और सामूहिक निगरानी की संस्कृति विकसित करना।

आजीविका: कृषि, पशुपालन, सूक्ष्म-उद्यम तथा गैर-कृषि गतिविधियों में पूँजी और प्रशिक्षण उपलब्ध कराना।

सामाजिक पूँजी: महिलाओं के बीच नेटवर्क, सूचना-साझेदारी, नेतृत्व और सामूहिक समस्या-समाधान की क्षमता विकसित करना।

इस प्रकार SHG केवल microcredit व्यवस्था नहीं है। उसकी प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि वित्तीय सेवाओं के साथ प्रशिक्षण, बाजार, सामुदायिक संगठन, सरकारी योजनाओं से convergence और महिलाओं की निर्णय-क्षमता कितनी मजबूत होती है।

6. भारत में स्वयं सहायता समूहों का विस्तार: 2022 तक की स्थिति

2022 तक भारत में SHG आंदोलन अत्यंत व्यापक हो चुका था। ग्रामीण विकास मंत्रालय के Year-End Review 2022 के अनुसार DAY-NRLM ने 8.71 करोड़ महिलाओं को लगभग 81 लाख SHGs में संगठित किया था। मिशन 6,861 ब्लॉकों और 723 जिलों तक पहुँच चुका था। इसी समीक्षा के अनुसार 4.68 लाख Village Organisations भी गठित हो चुके थे, जो SHGs को उच्चतर सामुदायिक संस्थागत ढाँचे से जोड़ते थे।

NABARD के अनुसार 31 मार्च 2022 तक SHG-Bank Linkage Programme में कुल 118.93 लाख SHGs बैंक-बचत से जुड़े थे, जिनमें 104.05 लाख महिला SHGs थे। अर्थात् बचत-लिंकड समूहों में महिलाओं का हिस्सा लगभग 87.43 प्रतिशत था। इन महिला समूहों की बैंकों में कुल बचत लगभग ₹42,104.77 करोड़ थी, जो इस कार्यक्रम में महिलाओं की केंद्रीय भूमिका को दर्शाती है।

सूचक	2022 तक उपलब्ध स्थिति	स्रोत/कटऑफ
DAY-NRLM से संगठित महिलाएँ	लगभग 8.71 करोड़	दिसंबर 2022
DAY-NRLM SHGs	लगभग 81 लाख	दिसंबर 2022
बैंक-बचत से जुड़े कुल SHGs	118.93 लाख	31 मार्च 2022

बैंक-बचत से जुड़े महिला SHGs	104.05 लाख	31 मार्च 2022
महिला SHGs की बैंक बचत	₹42,104.77 करोड़	31 मार्च 2022
2021-22 में ऋण प्राप्त महिला SHGs	31.50 लाख	NABARD 2021-22
2021-22 में महिला SHGs को ऋण	₹93,817.21 करोड़	NABARD 2021-22
DAY-NRLM महिला SHGs द्वारा संचयी बैंक ऋण	लगभग ₹5.90 लाख करोड़	दिसंबर 2022

इन आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि 2022 तक स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिला वित्तीय समावेशन का अत्यंत बड़ा संस्थागत नेटवर्क बन चुके थे। फिर भी समूहों की संख्या को महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं माना जा सकता; इसके लिए आय, बचत, ऋण उपयोग और agency के परिणामों का विश्लेषण आवश्यक है।

7. महिलाओं की बचत क्षमता पर प्रभाव

आर्थिक आत्मनिर्भरता में नियमित बचत की भूमिका मूलभूत है। कम आय वाले परिवारों में छोटी-छोटी राशियों की नियमित बचत महिला को आपातकालीन खर्च, छोटे निवेश और ऋण-योग्यता के लिए आधार प्रदान करती है। SHG की नियमित बैठक और लेखा-प्रक्रिया महिला को स्वयं धन संभालने का व्यावहारिक अनुभव भी देती है।

NABARD 2021-22 के अनुसार महिला SHGs की बैंक बचत ₹42,104.77 करोड़ थी। एक ओर यह राशि महिला समूहों की सामूहिक वित्तीय क्षमता दर्शाती है; दूसरी ओर यह इस बात का संकेत है कि SHG मॉडल गरीब ग्रामीण महिलाओं को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली में नियमित बचतकर्ता के रूप में स्थापित करने में सफल रहा।

DAY-NRLM के 2019-20 प्रभाव मूल्यांकन में अतिरिक्त 2.5 वर्ष के मिशन exposure के बाद treatment households की बचत में लगभग 28 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई। यह परिणाम महत्वपूर्ण है क्योंकि बचत केवल आय का अवशेष नहीं है; यह संकट-प्रबंधन, ऋण पर निर्भरता कम करने और छोटे उत्पादक निवेश की क्षमता को भी प्रभावित करती है।

8. औपचारिक ऋण और साहूकार पर निर्भरता

ग्रामीण गरीब परिवारों की एक पुरानी समस्या ऊँची ब्याज दर वाले अनौपचारिक ऋण स्रोतों पर निर्भरता रही है। संपत्ति, आय प्रमाण और formal credit history के अभाव में व्यक्तिगत गरीब महिला के लिए बैंक ऋण कठिन हो सकता है। SHG इस बाधा को समूह की बचत, पुनर्भुगतान अनुशासन और सामूहिक उत्तरदायित्व के माध्यम से कम करता है।

NABARD के अनुसार 2021-22 के दौरान 31.50 लाख महिला SHGs को लगभग ₹93,817.21 करोड़ का बैंक ऋण प्रदान किया गया। वहीं ग्रामीण विकास मंत्रालय के अनुसार दिसंबर 2022 तक DAY-NRLM महिला SHGs द्वारा FY 2013-14 से संचयी रूप से लगभग ₹5.90 लाख करोड़ बैंक ऋण प्राप्त किया जा चुका था।

30 नवंबर 2022 को SHGs के बैंकों के प्रति कुल outstanding loans लगभग ₹1,68,920.11 करोड़ थे और आधिकारिक रूप से repayment rate 97.71 प्रतिशत बताया गया। उच्च पुनर्भुगतान यह संकेत देता है कि सामूहिक निगरानी और peer accountability बैंक-लिंकेज को टिकाऊ बनाने में महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

2019–20 के 3ie/World Bank मूल्यांकन में अनौपचारिक ऋण की हिस्सेदारी में लगभग 20 प्रतिशत कमी दर्ज की गई। इसका अर्थ यह नहीं कि साहूकार पूरी तरह समाप्त हो गए, बल्कि यह कि SHG-आधारित औपचारिक वित्त ने महंगे ऋण पर निर्भरता कम करने का वैकल्पिक मार्ग प्रदान किया।

9. स्वयं सहायता समूह और महिला आय में वृद्धि

SHG मॉडल का अंतिम आर्थिक उद्देश्य केवल ऋण उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि आय-सृजन की क्षमता बढ़ाना है। DAY-NRLM के अंतर्गत कृषि, पशुपालन, डेयरी, बकरी पालन, गैर-काष्ठ वन उत्पाद, खाद्य प्रसंस्करण, हस्तशिल्प और अन्य सूक्ष्म उद्यमों को आजीविका से जोड़ा गया।

ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा दिसंबर 2022 में प्रकाशित 2019–20 के 3ie/World Bank प्रभाव मूल्यांकन में लगभग 27,000 उत्तरदाताओं और 5,000 SHGs को नौ राज्यों में शामिल किया गया। अध्ययन के अनुसार मिशन के अतिरिक्त 2.5 वर्ष के exposure से आधार राशि की तुलना में आय में लगभग 19 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई। यह इस paper के pre-2023 evidence में आय संबंधी सबसे प्रत्यक्ष राष्ट्रीय-स्तरीय findings में से एक है।

हालाँकि सभी पूर्ववर्ती अध्ययनों ने आय पर समान प्रभाव नहीं पाया। Deininger और Liu (2013) के आंध्र प्रदेश अध्ययन में महिला सशक्तीकरण, पोषण और consumption smoothing पर सकारात्मक परिणाम मिले, लेकिन आय और asset formation में स्पष्ट वृद्धि नहीं मिली। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि SHG का प्रभाव चरणबद्ध हो सकता है—पहले ऋण-सुरक्षा, उपभोग स्थिरता, गतिशीलता और agency में सुधार दिखाई दे सकता है, जबकि स्थायी आय या परिसंपत्ति निर्माण के लिए अधिक समय और बाजार-संबंधित सहायता की आवश्यकता होती है।

10. आय सृजन में ऋण की भूमिका

ऋण आर्थिक सशक्तीकरण तब उत्पन्न करता है जब वह उत्पादक परिसंपत्ति या आय-सृजन गतिविधि में परिवर्तित हो। केवल ऋण की उपलब्धता पर्याप्त नहीं है। उदाहरणतः डेयरी के लिए पशु, सिलाई के लिए मशीन, खाद्य प्रसंस्करण के लिए उपकरण, दुकान के लिए working capital या कृषि के लिए इनपुट में निवेश से नियमित आय बनने की संभावना अधिक होती है।

Datta (2015) ने बिहार के JEEViKA कार्यक्रम में पाया कि लाभार्थी परिवारों का high-cost debt burden कम हुआ, वे छोटे ऋण बार-बार प्राप्त कर सके और गैर-सदस्य परिवारों की तुलना में productive purposes के लिए ऋण लेने की संभावना अधिक थी। इससे यह संकेत मिलता है कि SHG-आधारित वित्त का प्रभाव ऋण-स्रोत बदलने के साथ-साथ ऋण के उपयोग की प्रकृति पर भी पड़ सकता है।

फिर भी ऋण का गैर-उत्पादक उपयोग पूरी तरह नकारात्मक नहीं माना जा सकता। बीमारी, शिक्षा या आपातकाल में सस्ता ऋण परिवार को महंगे साहूकारी ऋण से बचा सकता है। लेकिन आर्थिक आत्मनिर्भरता के दृष्टिकोण से दीर्घकालीन सफलता के लिए कम-से-कम कुछ ऋण का productive asset और recurring income में बदलना आवश्यक है।

11. महिला उद्यमिता का विस्तार: 2022 तक

2022 तक DAY-NRLM ने ग्रामीण महिला आजीविका में farm और non-farm दोनों रणनीतियों पर बल दिया। Year-End Review 2022 के अनुसार farm interventions के अंतर्गत 1.96 करोड़ से अधिक महिला किसानों को जोड़ा गया था। Non-farm क्षेत्र में Start-Up Village Entrepreneurship Programme (SVEP), जिसे 2016-17 से लागू किया गया, 2022 तक 2.21 लाख से अधिक enterprises को समर्थन दे चुका था।

यह परिवर्तन महत्वपूर्ण है क्योंकि ग्रामीण महिला की भूमिका मजदूरी करने वाली या पारिवारिक सहायक से आगे बढ़कर उत्पादक, सेवा-प्रदाता और सूक्ष्म उद्यमी के रूप में विकसित हो सकती है। लेकिन micro-enterprise तभी टिकाऊ बनता है जब वित्त के साथ बाजार, गुणवत्ता, लागत गणना, प्रशिक्षण, आपूर्ति शृंखला और ग्राहक-आधार भी उपलब्ध हों।

SHG आधारित उद्यमिता के संदर्भ में पैमाने की समस्या विशेष महत्व रखती है। कई महिलाएँ समान कम-पूँजी गतिविधियाँ शुरू करती हैं; यदि स्थानीय मांग सीमित हो, तो उत्पादन बढ़ने के बावजूद प्रति महिला आय नहीं बढ़ती। इसलिए उद्यमिता के परिणाम का मूल्यांकन केवल 'व्यवसाय शुरू हुआ या नहीं' से नहीं, बल्कि बिक्री, लाभ, टिकाऊपन और महिला के नियंत्रण से किया जाना चाहिए।

12. 2022 तक आय-आधारित आजीविका एवं वित्तीय समावेशन दृष्टिकोण

2023 के बाद प्रारंभ या विस्तारित पहलों को इस अध्ययन में शामिल नहीं किया गया है। 2022 तक DAY-NRLM की रणनीति में भी समूह गठन के साथ sustainable livelihoods, financial inclusion, farm/non-farm enterprise और सामाजिक विकास पर जोर स्पष्ट था। दिसंबर 2022 तक Community Investment Support Fund के रूप में लगभग ₹19,707.24 करोड़ की संचयी सहायता संस्थाओं को दी जा चुकी थी।

इसी अवधि में interest subvention व्यवस्था के तहत ₹3 लाख तक के ऋण को 7 प्रतिशत वार्षिक ब्याज दर से उपलब्ध कराने और ₹3-5 लाख तक के ऋण के लिए भी ब्याज सहायता की व्यवस्था की गई। इन प्रावधानों का आर्थिक महत्व यह है कि गरीब महिला के लिए केवल 'ऋण उपलब्ध है' से आगे बढ़कर 'ऋण की लागत कितनी है' भी उद्यम की व्यवहार्यता को प्रभावित करती है।

आर्थिक आत्मनिर्भरता का pre-2023 दृष्टिकोण इसलिए तीन चरणों में समझा जा सकता है: पहला, संगठन और नियमित बचत; दूसरा, सस्ती औपचारिक ऋण सुविधा; और तीसरा, उस वित्त को टिकाऊ आजीविका, productive asset और बाजार-सक्षम उद्यम में बदलना।

13. आर्थिक निर्णय क्षमता और बैंकिंग agency

आर्थिक आत्मनिर्भरता का महत्वपूर्ण संकेत यह है कि महिला वित्तीय लेन-देन स्वयं कितनी स्वतंत्रता से कर सकती है। समूह बैठक, बचत-लेखा, बैंक यात्रा और ऋण पुनर्भुगतान के अनुभव से महिलाओं की financial literacy और confidence में क्रमिक वृद्धि हो सकती है।

2022 तक DAY-NRLM ने SHG महिलाओं को Business Correspondent/BC Sakhi के रूप में भी बैंकिंग सेवा प्रदाता बनाया। Year-End Review 2022 के अनुसार 1,02,558 SHG सदस्य BC Sakhi के रूप में प्रशिक्षित और प्रमाणित थीं तथा लगभग 88,000 ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल बैंकिंग सेवाएँ दे रही थीं। यह केवल बैंकिंग की पहुँच का प्रश्न नहीं था; इससे कुछ महिलाएँ स्वयं वित्तीय मध्यस्थ और सेवा-प्रदाता की भूमिका में आईं।

Swain और Wallentin (2009) ने पाँच भारतीय राज्यों के 2000 और 2003 के panel-type data पर पाया कि SHG सदस्यों के empowerment में औसतन महत्वपूर्ण वृद्धि हुई, जबकि control group में वैसी महत्वपूर्ण वृद्धि नहीं देखी गई। यह finding बताती है कि वित्तीय समूह-भागीदारी का प्रभाव केवल आय तक सीमित न होकर सामाजिक मानदंडों, निर्णय क्षमता और आत्मविश्वास तक पहुँच सकता है।

14. सामूहिकता और महिलाओं की सौदेबाजी क्षमता

व्यक्तिगत गरीब महिला की ऋणदाता, व्यापारी या स्थानीय बाजार के सामने bargaining power सीमित हो सकती है। समूह महिला को सूचना, मात्रा, परिवहन, प्रशिक्षण और सामूहिक आवाज का लाभ देता है। कच्चे माल की सामूहिक खरीद, सामूहिक विपणन, बेहतर मूल्य पर बातचीत और उत्पाद की गुणवत्ता के मानक तय करने से लागत तथा बाजार-जोखिम घट सकता है।

सामूहिकता का प्रभाव केवल आर्थिक लेन-देन तक सीमित नहीं है। SHG बैठक महिलाओं को सार्वजनिक संवाद, रिकॉर्ड रखने, प्रतिनिधियों से संपर्क और सामुदायिक मुद्दों पर चर्चा का नियमित मंच देती है। Brody et al. (2017) की systematic review ने आर्थिक SHGs के आर्थिक और राजनीतिक empowerment, mobility और family-planning control पर सकारात्मक प्रभाव पाए; गुणात्मक प्रमाणों में money handling, financial decision-making, solidarity, social networks और household/community respect को प्रमुख mechanisms बताया गया।

फिर भी समूह-आधारित सामूहिकता स्वतः प्रभावी नहीं होती। नेतृत्व पर कुछ सदस्यों का नियंत्रण, कमजोर बैठकें, पारदर्शिता की कमी या बाहरी facilitating agency की सीमित भूमिका समूह की bargaining power को कम कर सकती है।

15. स्वयं सहायता समूह और सामाजिक आत्मनिर्भरता

आर्थिक सशक्तीकरण और सामाजिक सशक्तीकरण एक-दूसरे से जुड़े हैं। जब महिला नियमित बैठक में भाग लेती है, बैंक या सरकारी कार्यालय जाती है, सामूहिक निर्णय लेती है और बाजार से जुड़ती है, तो उसकी mobility और सामाजिक संपर्क का दायरा बढ़ सकता है।

Datta (2015) के JEEViKA अध्ययन में लाभार्थी महिलाओं में mobility, decision-making और collective action के आयामों पर उच्च empowerment पाया गया। उसी अध्ययन में high-cost debt कम होने के साथ food security, sanitation preferences और कुछ परिसंपत्तियों पर भी सकारात्मक संकेत मिले, यद्यपि livelihood options में व्यापक परिवर्तन नहीं पाया गया। Deininger और Liu (2013) ने सामाजिक और आर्थिक empowerment तथा पोषण में सुधार पाया, और यह भी संकेत मिला कि कार्यक्रम-क्षेत्र में कुछ सामाजिक लाभ non-participants तक पहुँच सकते हैं। इस प्रकार SHG का सामुदायिक प्रभाव केवल सदस्य की व्यक्तिगत balance sheet से अधिक व्यापक हो सकता है।

16. 2023 से पहले उपलब्ध प्रमुख शोध-निष्कर्षों का समेकित विश्लेषण

2023 से पहले उपलब्ध साहित्य एक समान निष्कर्ष नहीं देता, लेकिन कुछ व्यापक patterns स्पष्ट हैं। प्रमुख findings को निम्न रूप में समेकित किया जा सकता है—

पहला, Swain और Wallentin (2009) ने SHG सदस्यों में control group की तुलना में महत्वपूर्ण रूप से अधिक महिला empowerment पाया। इससे यह संकेत मिला कि समूह-भागीदारी केवल credit access नहीं, बल्कि सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने और निर्णय-क्षमता बढ़ाने की प्रक्रिया से जुड़ सकती है।

दूसरा, Deininger और Liu (2013) ने आंध्र प्रदेश के SHG-आधारित कार्यक्रम में female empowerment, nutrition, consumption smoothing और income diversification पर सकारात्मक प्रभाव पाए; लेकिन income और asset formation पर स्पष्ट प्रभाव नहीं मिला। यह finding बताती है कि empowerment और income वृद्धि हमेशा एक ही गति से नहीं चलते।

तीसरा, Datta (2015) के JEEViKA अध्ययन में beneficiary households का high-cost debt burden कम हुआ, productive borrowing बढ़ी और महिलाओं की mobility, decision-making तथा collective action मजबूत हुई। कुछ assets, food security और sanitation में भी सुधार मिले, किंतु कृषि-आधारित livelihood pattern में कोई बड़ा संरचनात्मक परिवर्तन नहीं पाया गया।

चौथा, Brody et al. (2017) की systematic review में आर्थिक SHGs के economic empowerment, political empowerment, mobility और family-planning control पर सकारात्मक औसत प्रभाव मिले। लेकिन psychological empowerment पर स्पष्ट सकारात्मक प्रभाव का प्रमाण नहीं मिला। इससे यह सावधानी सामने आती है कि empowerment बहुआयामी है और एक आयाम में सुधार दूसरे सभी आयामों में स्वतः परिवर्तन की गारंटी नहीं देता।

पाँचवाँ, DAY-NRLM के 2019–20 3ie/World Bank impact evaluation—जिसके निष्कर्ष दिसंबर 2022 तक आधिकारिक रूप से उपलब्ध थे—में additional 2.5 years of Mission exposure के साथ income में 19 प्रतिशत वृद्धि, informal loans के share में 20 प्रतिशत कमी, savings में 28 प्रतिशत वृद्धि, secondary occupation report करने वाली महिलाओं का अनुपात treatment areas में 4 प्रतिशत अधिक और social schemes के उपयोग में 6.5 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई।

समेकित रूप से pre-2023 evidence यह दर्शाता है कि SHGs का सबसे सुसंगत प्रभाव वित्तीय पहुँच, बचत, महंगे ऋण से आंशिक मुक्ति, mobility, decision-making और collective agency पर दिखाई देता है। आय और asset creation पर परिणाम अधिक heterogeneous हैं। इसलिए SHG की सफलता का मूल्यांकन केवल credit volume या membership से नहीं, बल्कि इन बहुआयामी outcomes के संयुक्त विश्लेषण से होना चाहिए।

17. 2022 तक स्वयं सहायता समूहों की प्रमुख चुनौतियाँ

17.1 छोटे पैमाने का व्यवसाय

अनेक ग्रामीण महिला उद्यम अत्यंत छोटे पैमाने पर संचालित होते हैं। कम पूँजी, सीमित ग्राहक और समान गतिविधियों में अधिक समूहों की प्रविष्टि से प्रति उद्यम लाभ सीमित हो सकता है।

17.2 बाजार-संपर्क की समस्या

उत्पादन आरंभ करना अपेक्षाकृत आसान है, पर नियमित बाजार बनाना कठिन है। पैकेजिंग, गुणवत्ता, परिवहन, थोक खरीदार और शहरों तक पहुँच की कमी आय-वृद्धि को रोक सकती है।

17.3 ऋण का गैर-उत्पादक उपयोग

बीमारी, सामाजिक समारोह या पुराने कर्ज की अदायगी में ऋण उपयोग होने पर तत्काल संकट कम हो सकता है, लेकिन नया आय स्रोत नहीं बनता। इसलिए livelihood credit और emergency credit की अलग जरूरतें समझना आवश्यक है।

17.4 कौशल और व्यवसाय प्रबंधन

तकनीकी कौशल के साथ costing, bookkeeping, inventory, गुणवत्ता नियंत्रण और ग्राहक प्रबंधन का अभाव उद्यम की वृद्धि को सीमित करता है।

17.5 महिलाओं पर दोहरा कार्यभार

आर्थिक गतिविधि से जुड़ने के बाद भी घरेलू और देखभाल कार्य का भार प्रायः महिला पर ही रहता है। इससे उसकी आय बढ़ने के साथ time poverty भी बढ़ सकती है।

17.6 समूहों की असमान गुणवत्ता

सभी SHGs एक समान सक्रिय नहीं होते। बैठक की नियमितता, लेखांकन, नेतृत्व, repayment discipline और federation support में अंतर परिणामों को प्रभावित करता है।

17.7 डिजिटल विभाजन

2022 तक डिजिटल बैंकिंग और ई-कॉमर्स का विस्तार हो चुका था, किंतु smartphone, internet access और digital literacy में लैंगिक तथा ग्रामीण अंतर कई महिलाओं के लिए बाधा बने रहे।

17.8 क्षेत्रीय विविधता

दक्षिण भारत, बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश और अन्य क्षेत्रों में SHG की परिपक्वता, बैंक व्यवहार, सामाजिक मानदंड और बाजार अवसर भिन्न हैं। अतः राष्ट्रीय औसत को हर राज्य पर समान रूप से लागू नहीं किया जा सकता।

18. स्वयं सहायता समूहों को अधिक प्रभावी बनाने हेतु सुझाव

1. समूहों का मूल्यांकन केवल membership और loan disbursement से नहीं, बल्कि महिला की व्यक्तिगत आय, लाभ, बचत और productive assets में परिवर्तन से किया जाए।
2. SHG credit को livelihood planning से जोड़ा जाए ताकि ऋण की राशि और अवधि व्यवसाय की वास्तविक आवश्यकता के अनुकूल हो।
3. आपातकालीन/उपभोग ऋण और उद्यम ऋण के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से अलग रखते हुए दोनों प्रकार की आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त वित्तीय उत्पाद विकसित किए जाएं।
4. छोटे स्थानीय उद्यमों को producer groups, FPOs, cooperatives, federations और बड़े खरीदारों से जोड़कर scale और market access बढ़ाया जाए।
5. महिला सदस्यों को costing, bookkeeping, डिजिटल भुगतान, packaging, quality control और e-commerce का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाए।

6. सफल SHG उद्यमों को repeat finance और larger enterprise credit तक पहुँच दी जाए, ताकि वे subsistence activity से growth-oriented enterprise बन सकें।
7. BC Sakhi और अन्य community cadres के माध्यम से वित्तीय साक्षरता तथा अंतिम-मील बैंकिंग सेवाएँ बढ़ाई जाएँ।
8. महिलाओं की income control, bank-operation autonomy और household decision-making को programme monitoring indicators में शामिल किया जाए।
9. childcare और unpaid domestic work के बोझ को livelihood programme design में शामिल किया जाए, ताकि आर्थिक भागीदारी महिला पर असंगत समय-बोझ न डाले।
10. राज्य और स्थानीय बाजार की भिन्नता के अनुसार SHG livelihood strategy बनाई जाए; एक ही activity model सभी क्षेत्रों पर लागू न किया जाए।

19. अध्ययन की सीमाएँ

पहली सीमा यह है कि यह अध्ययन राष्ट्रीय और बहु-राज्यीय द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। राज्य, जाति, आय-वर्ग, SHG की परिपक्वता और स्थानीय बाजार के अनुसार प्रभाव में व्यापक भिन्नता हो सकती है।

दूसरी सीमा यह है कि SHG-Bank Linkage Programme और DAY-NRLM के आँकड़े अलग programme universes को दर्शाते हैं; इसलिए समूह-संख्या और ऋण-संख्या को सीधे जोड़ना उचित नहीं है।

तीसरी सीमा यह है कि pre-2023 impact studies की methodology, geography और outcome measures अलग हैं। किसी अध्ययन का 19 प्रतिशत income effect और दूसरे अध्ययन का income पर insignificant effect परस्पर विरोधाभास नहीं, बल्कि अलग intervention maturity, sample और context का परिणाम हो सकता है।

चौथी सीमा यह है कि economic self-reliance को केवल household income से नहीं मापा जा सकता। महिला की व्यक्तिगत आय, income control, asset ownership, time use, mobility, financial agency और decision-making भी आवश्यक dimensions हैं।

अंततः इस संशोधित संस्करण की समय-सीमा 31 दिसंबर 2022 है। 2023 और उसके बाद की योजनाएँ, आँकड़े, मूल्यांकन और नीति-परिवर्तन जानबूझकर शामिल नहीं किए गए हैं।

20. निष्कर्ष

2023 से पहले उपलब्ध आँकड़े और शोध यह स्पष्ट करते हैं कि भारत में स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक संगठन का एक विशाल मंच बन चुके थे। दिसंबर 2022 तक DAY-NRLM में 8.71 करोड़ महिलाओं का लगभग 81 लाख SHGs में संगठित होना और मार्च 2022 तक NABARD के बैंक-लिंकड नेटवर्क में 104.05 लाख महिला SHGs का होना इस संस्थागत विस्तार की व्यापकता दर्शाता है।

SHGs की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि गरीब ग्रामीण महिलाओं को नियमित बचत, औपचारिक ऋण, बैंकिंग संपर्क, सामूहिक पहचान और स्थानीय आर्थिक गतिविधि के लिए संस्थागत आधार देना है। 2021-22 में महिला SHGs को लगभग ₹93,817 करोड़ बैंक

ऋण और दिसंबर 2022 तक DAY-NRLM महिला SHGs द्वारा लगभग ₹5.90 लाख करोड़ संचयी बैंक credit access वित्तीय समावेशन की गहराई दर्शाते हैं।

लेकिन आर्थिक आत्मनिर्भरता का सबसे मजबूत प्रमाण केवल ऋण की मात्रा नहीं है। 2019-20 के impact evaluation में आय में 19 प्रतिशत वृद्धि, informal loans में 20 प्रतिशत कमी और savings में 28 प्रतिशत वृद्धि जैसे परिणाम यह संकेत देते हैं कि परिपक्व SHG institutions household financial resilience और livelihood outcomes को प्रभावित कर सकती हैं। पुराने अध्ययनों में mobility, decision-making, collective action, nutrition और consumption smoothing में भी सकारात्मक परिणाम मिले हैं।

इसके साथ ही साहित्य यह भी चेतावनी देता है कि SHG सदस्यता अपने आप हर महिला की आय और संपत्ति में वृद्धि नहीं करती। कुछ अध्ययनों में income तथा asset formation पर सीमित परिणाम मिले। अतः वास्तविक सफलता तब मानी जानी चाहिए जब महिला की व्यक्तिगत और नियमित आय बढ़े, वह अपनी आय के उपयोग पर नियंत्रण रखे, महंगे ऋण से निर्भरता कम हो, ऋण productive asset में बदले, व्यवसाय बाजार में टिके और घरेलू आर्थिक निर्णयों में उसकी भूमिका मजबूत हो।

समेकित रूप से pre-2023 evidence का निष्कर्ष यह है कि स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक आश्रित से आर्थिक सहभागी और निर्णयकर्ता की दिशा में आगे बढ़ाने की वास्तविक क्षमता रखते हैं, पर यह क्षमता तभी पूर्ण परिणाम देती है जब credit के साथ skill, market, enterprise support, social capital और agency को समान महत्व दिया जाए। इसी बहुआयामी दृष्टिकोण से SHG मॉडल ग्रामीण महिला आर्थिक आत्मनिर्भरता और समावेशी विकास का अधिक प्रभावी आधार बन सकता है।

संदर्भ सूची

- Brody, C., de Hoop, T., Vojtkova, M., Warnock, R., Dunbar, M., Murthy, P., & Dworkin, S. (2017). क्या स्वयं-सहायता समूह कार्यक्रम महिलाओं के सशक्तिकरण को बेहतर बना सकते हैं? एक व्यवस्थित समीक्षा। *Journal of Development Effectiveness*, 9(1), 15–40. <https://doi.org/10.1080/19439342.2016.1206607>
- Datta, U. (2015). JEEViKA का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव: भारत के बिहार में एक बड़े पैमाने पर स्वयं-सहायता समूह परियोजना। *World Development*, 68, 1–18. <https://doi.org/10.1016/j.worlddev.2014.11.013>
- Deininger, K., & Liu, Y. (2013). भारत में एक अभिनव स्वयं-सहायता समूह मॉडल का आर्थिक और सामाजिक प्रभाव। *World Development*, 43, 149–163. <https://doi.org/10.1016/j.worlddev.2012.09.019>
- Kabeer, N. (1999). संसाधन, एजेंसी, उपलब्धियां: महिलाओं के सशक्तिकरण के मापन पर विचार। *Development and Change*, 30(3), 435–464.
- ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार। (2022a). वर्ष-अंत समीक्षा 2022: ग्रामीण विकास विभाग। नई दिल्ली।
- ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार। (2022b). बैंकों को SHGs द्वारा ऋण अदायगी की दर 97.71 प्रतिशत है: DAY-NRLM के प्रभाव मूल्यांकन के निष्कर्ष। नई दिल्ली।
- ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार। (2022c). स्वयं-सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं के लिए योजनाएं। नई दिल्ली।

राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक। (2022). भारत में माइक्रोफाइनेंस की स्थिति 2021–22। NABARD, मुंबई। स्वेन, आर. बी., और वैलेंटिन, एफ. वाई. (2009). क्या माइक्रोफाइनेंस महिलाओं को सशक्त बनाता है? भारत में स्वयं-सहायता समूहों से मिले सबूत। इंटरनेशनल रिव्यू ऑफ़ एप्लाइड इकोनॉमिक्स, 23(5), 541–556. <https://doi.org/10.1080/02692170903007540>





Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ. गोविन्द कुमार सुमन

For publication of research paper title

“स्वयं सहायता समूहों का ग्रामीण महिलाओं की आय एवं
आर्थिक आत्मनिर्भरता पर प्रभाव”

Published in ‘Shiksha Samvad’ Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and
E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-02, Month December, Year- 2023.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper
must be available online at www.shikshasamvad.com